# सुर साधना

## समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
## ज्ञान मार्ग

अंक 12, जुलाई-सितम्बर 2026 अनियमित पत्रक वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल सीमित वितरण के लिए
सहयोग राशि रु. 20/-

**साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़**

### सम्पादकीय : ज्ञान, शिक्षा और रोज़गार की गारंटी में सबकी खुशहाली का एक आधार है.

नीट परीक्षा के पेपर लीक होने के खिलाफ दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए युवाओं के आन्दोलन की सफलता और हौसले ने निश्चित ही आशा की किरण जगाई है. युवाओं ने शिक्षा व्यवस्था के उच्चतम पदाधिकारी को इस्तीफा देने के लिए बाध्य कर दिया. इस आन्दोलन की प्रेरणा से देश के कुछ हिस्सों में स्कूली शिक्षा की अव्यवस्था को सामने ले आने के लिए युवाओं ने पहल भी ली. इस आन्दोलन के चलते स्कूली छात्र भी सक्रिय हो गए.

हम ये मानते हैं कि आन्दोलन को केवल शिक्षित युवाओं और उनमें भी नौकरी हासिल करने के लिए प्रवेश परीक्षाओं तक पहुँच पाने वाले युवाओं के बारे में ही नहीं बल्कि उन तमाम युवा, स्त्री और पुरुषों के बारे में सोचना है, जो रोज़गार की प्रवेश परीक्षाओं तक तो क्या कालेज तक भी नहीं पहुँच पाते हैं. युवाओं के सामने बड़ी चुनौती है.

आज़ादी के बाद से हमारे देश में स्कूली शिक्षा का सार, नियोजन और संचालन उच्चशिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने का रहा. यानि प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों की भूमिका बालकों को उच्च शिक्षा को हासिल कर पाने के काबिल बनाने में ही देखी गई. इसलिए स्कूली शिक्षा का अपना कोई चित्र नहीं बन पाया.

आज़ादी के बाद देश ने बड़े उद्योगों के निर्माण में देश का विकास देखा, फलस्वरूप साइंस आधारित पढ़ाई को सर्वोच्च प्राथमिकता और प्रतिष्ठा मिली. साइंस की शिक्षा के लिए बड़े-बड़े कालेज और शोध संस्थान बनाये गए. लेकिन बड़े उद्योगों पर आधारित विकास को देश के बहुजन ने शुरू से ही संदेह से देखा. किसान, कारीगर और आदिवासियों को यानि बहुजन को, इसमें जीवन की तबाही दिखाई दी और इसके विरोध में पुरज़ोर आवाज़ें भी उठाई. लेकिन दिल्ली की सत्ता ने इसे अनसुना किया और बहुजन की बजाए दिल्ली-केन्द्रित-सत्ता को और अधिक मज़बूत बनाने के सारे उपक्रम किये. नतीजा आज सामने है.

लेकिन अब औद्योगिक युग इतिहास बन चुका है और संचार व सूचना प्रौद्योगिकी तथा अत्याधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी का युग है. इस युग में साइंस (पदार्थ, बल, प्रक्रिया आदि से सम्बंधित भौतिक ज्ञान) की भूमिका घटती जा रही है और प्रबंधन से सम्बंधित ज्ञान को सर्वोच्च प्राथमिकता और प्रतिष्ठा है. यानि अंग्रेजों से हमने जिस दृष्टिकोण को ग्रहण कर देश की शिक्षा-व्यवस्थाएं बनाई थीं उसकी बुनियाद पर वो अब कार्पोरेट हितों को दृष्टि में रखते हुए आकार ले चुकी है. शिक्षा क्षेत्र में आये इस बदलाव को शिक्षा के सार, नीतियों और व्यवस्थाओं में स्पष्टत: देखा जा सकता है.

हम मानते हैं कि एक ही प्रकार के ज्ञान को जायज़ बना देने से बहुजनविरोधी, एकाधिकारवादी, ब्राह्मणवादी और साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां तेज़ी से पनपती है. इसी वजह से आधुनिक राज्यव्यवस्था में बहुजन युवक-युवतियों को शिक्षा और नौकरी मुहैय्या करने की ताकत नहीं बन पाती है. .

**इस दृष्टि से हम शिक्षा-क्षेत्र में निम्नलिखित मुद्दों पर चिंतन की गुजारिश करते हैं.**

1. **शिक्षा में सुधार की किसी भी पहल के लिए पहले 'ज्ञान' पर विचार करना आवश्यक है. यह मान लिया गया है कि शिक्षा का सार आधुनिक साइंस से तय होगा, क्योंकि इसे ही एकमात्र प्रगतिशील, तर्कनिष्ठ और सही ज्ञान मान लिया गया है, जबकि समाज में ज्ञान यानि लोकविद्या बहुत बड़े पैमाने पर जीवंत हैं और इसमें तर्क, सत्ता, और जीवनमूल्य के अपने सिद्धांत और दर्शन हैं.**
2. **सवाल नौजवानों के भविष्य का है. इसके लिए आधुनिक शिक्षा और नौकरी को एकमात्र रास्ता न बनाया जाए. लोकविद्या के आधार पर रोज़गार को सरकारी कर्मचारी के जैसा सम्मान, सुरक्षा और बराबर की आय की गारंटी की नीति और व्यवस्था बनाई जाये.**
3. **शिक्षा में सुधार अथवा बदलाव शिक्षा के आख्यान को बदलने का प्रश्न है, जो सामान्य जन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि अनेक क्षेत्रों के नए आख्यान को गढ़ने और तदनुसार बदलाव की मांग करता है.**
4. **शिक्षा का सामाजीकरण होना चाहिए. इसके लिए यह ज़रूरी है कि 'ज्ञान' का सामाजीकरण हो यानि समाज की विविध ज्ञान-धाराओं में ऊँच-नीच ख़त्म हो और ऐसी सोच, प्रवृत्ति, कार्य और व्यवस्थाओं को न्यायपूर्ण और जायज़ माना जाये. यह 'बौद्धिक सत्याग्रह' का पहला कदम है.**
5. **ज्ञान का निजीकरण और व्यापार अपराध है. लेकिन आज प्रबंधन के ज्ञान पर बनाई जा रही दुनिया ने इसे जायज़ बना दिया है.**

सुर साधना का यह अंक इन मुद्दों पर चिंतन की प्रक्रिया को बहुजन में ले जाने का एक प्रयास है.

## इस अंक के बारे में

सुर साधना का यह अंक शिक्षा-क्षेत्र के लिए एक नए आख्यान को गढ़ने का आग्रह करता है. बहुजन की दृष्टि और भागीदारी के साथ इसे करने का आग्रह करता है. इस दिशा में शुरू किये गए चिंतन और कार्यक्रमों से जुड़े लेखों को इस अंक में शामिल किया गया है.

साथ ही छतरपुर, मध्यप्रदेश में 2,3,4 दिसंबर 2026 में होने वाली बहुजन स्वराज पंचायत की दूसरी कड़ी का निमंत्रण भी है. **लेखों की सूची के लिए कृपया अंतिम पृष्ठ देखें.**

•

## कविता

-गिरीश सहस्रबुद्धे

| मराठी | हिंदी अनुवाद |
|---|---|
| जिथे लोक-ज्ञान नाकारून<br>कास्तकार-कारागीर-आदिवासी<br>महिला अडाणी ठरवले जातात<br>सात सागरा पलीकडे बघून<br>ज्ञानाची भिक्षा मागितली जाते | जहाँ लोकविद्या को नकारकर<br>किसान,कारीगर,आदिवासी और महिला<br>गँवार बताये जाएँ<br>और सात समुंदर पार से ज्ञान<br>भीख मांगकर लाया जाये |
| तिथे शिक्षण महाग होणार!<br>आणि बहुजनांना दुरावणार!! | वहाँ शिक्षा महंगी ही होगी<br>बहुजन को अजनबी भी रहेगी।। |
| जिथे लोक-ज्ञान नाकारून<br>लोक-जीविकेची साधने लुटून<br>ज्ञानी भिकेला लावले जातात<br>रिकामे, लाचार बनवले जातात | जहाँ लोकविद्या को नकार<br>बहुजन की जीविका छीन<br>ज्ञानधर निर्धन बनाये जाएँ<br>पामाल और लाचार बनाए जाएँ |
| तिथे शिक्षण 'ज्ञाना'चे लायसन्स<br>आणि बहुजन-विरोधी होणार!! | वहाँ शिक्षा 'ज्ञान' का लाइसेंस होगी<br>और बहुजन-ज्ञान की बैरी होगी ।। |
| जिथे लोक-ज्ञान नाकारून<br>बहुजन समाजातून उठवून<br>'ज्ञाना'च्या बेटांत शिकवून<br>कंपन्यांचे गुलाम काढणार | जहाँ लोकविद्या को नकार<br>बहुजन समाज से विलग उठा<br>'ज्ञान' के अलग-थलग टापुओं पर पढ़ा<br>कंपनी के नौकर बनाये जायेंगे |
| तिथे शिक्षण महागणार!<br>आणि रोजगार दुर्मिळ होणार!! | वहाँ शिक्षा महँगी होगी<br>और रोज़गार दुर्लभ होगा ॥ |
| जिथे लोक-ज्ञान नाकारून<br>बांडगुळे 'ज्ञानी' ठरवून<br>'ज्ञानी' गुलामांच्या गरजा<br>देशाच्याच म्हणून पोसणार | जहाँ लोकविद्या को नकार<br>परजीवियों को 'ज्ञानी' करार दें<br>और गुलाम 'ज्ञानियों' की ज़रूरतों को<br>देश की ज़रूरत बता पोसा जाएँ |
| तिथे शिक्षण ज्ञानाला दुरावणार!<br>ज्ञानाचे वाली शेवटी बहुजनच ठरणार!! | वहाँ शिक्षा से ज्ञान का निष्कासन तय है<br>बहुजन ज्ञान ही तारणहार होगा ॥ |

## शिक्षा का ज्ञान से रिश्ता

-प्रेमलता सिंह

आधुनिक शिक्षा नौकरी की ओर धकेलती है, जो सबको उपलब्ध ही नहीं है। व्यवस्था के प्रति असंतोष के साथ परिवर्तन के चाहत की छटपटाहट आज बहुजन के तबको में दिखाई देती है.

दिल्ली के जंतर मंतर पर छात्रों का आंदोलन राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था की नाकामियों से उपजा है, जिसका समर्थन भारतीय किसान यूनियन ने भी किया। परन्तु इस आंदोलन में व्यापक (बहुजन) समाज के उन युवक युवतियों का जिक्र कहीं भी नहीं हुआ, जो विश्वविद्यालय और कॉलेज तक पहुंच ही नहीं पाते। इनमें से कई छात्रों के परिवार उनके नीट या किसी ऊँची परीक्षा की तैयारी के लिए अपने दो ढाई बीघे खेती की ज़मीन में से पांच-दस बिसवां बेच दिया लेकिन उन छात्रों की ओर से भी अपने समाज-परिवार की वस्तुस्थिति का जिक्र कहीं नहीं आया। इसका मतलब हुआ कि यह आंदोलन एकांगी, एकतरफा था। परन्तु समाज तो बहुत बड़ा है, जिसमें किसान, तरह-तरह के कारीगर, पटरी-ठेले के छोटे व्यवसाई, और गीत-संगीत, नदी, वन, पहाड़, वनस्पति, मरुस्थल के ज्ञानी हैं जो, समाज प्रदत्त अपने ज्ञान कौशल से अपनी जीविका उपार्जन के साथ देश की आर्थिकी समृद्ध करते हैं। परन्तु देश की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में यह बहुजन समाज कहाँ स्थित है? यह चिन्तन का विषय है.

दरअसल बहुजन हित के लिए देश की नीतियां बनतीं ही नहीं। नीतियां बनायी जाती हैं बड़े उद्योगों के हित के लिए। जिनके पास समाज और देश की अकूत संपदा केंद्रित होती जाती है. जिनके बदौलत विश्वविद्यालय, अदालत, गाँव से लगायत केंद्र तक की सत्ताएं और आस्था खरीदी बेचीं जाती हैं। समाज के ज्ञान को तिरोहित करने और नई पीढ़ी व युवा लोगों को ज्ञानहीन, संवेदनाहीन बनाने के कुचक्र रचे जा रहे हैं। दूसरी तरफ बाज़ार खुले दानव की तरह समाज के मानसिक व शारिरिक स्थिति को अनैतिक, अस्वास्थ्यकर तरीके से अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। इन नीतियों और व्यवस्थाओं के खिलाफ संघर्ष का विचार गढ़ना है.

युवा जन और हम सभी को इन कारगुजारियों को भलीभांति समझते बूझते हुए नए आख्यान (नैरेटिव) गढ़ने की जरूरत है. इसके लिए सतत संवाद, चिन्तन, विशेष रूप से बहुजन समाज के साथ घनी वार्ता करनी होगी। संघर्ष की राह लंबी व कठिन है पर असंभव नहीं है।

•

**रपट**

## विद्या आश्रम के स्थापना दिवस पर ज्ञान पंचायत का आयोजन

## विषय : शिक्षा, रोज़गार और बहुजन स्वराज

-रामजनम

विद्या आश्रम का 22वां स्थापना दिवस 1अगस्त 2026 को मनाया गया। इस अवसर पर एक ज्ञान पंचायत आयोजित की गई जिसका विषय **शिक्षा, रोजगार और बहुजन स्वराज** रहा। इस ज्ञान पंचायत के फोटो/वीडियों आप इस लिंक पर देख सकते हैं https://www.vidyaashram.org/events/#1785422859359-5a05f9c4-d0ea

सर्वप्रथम लोकविद्या सत्संग का कार्यक्रम चला। सामू भगत जी ने लोकविद्या दर्शन को खोलने वाले कई पद प्रस्तुत किये. जिनमें लोकविद्या के स्वामी बोल, भरम झाड़ के बार दे मनवा, जान ले रे दीवाना, घुंघट के पट खोल, तू कहता कागज की लेखी, लोकविद्या की ज्ञान जड़ी प्रमुख थे

महामानव बुद्ध की नगरी सारनाथ में सभी आगंतुकों के स्वागत-अभिनंदन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। **"शिक्षा, रोजगार और बहुजन स्वराज"** **विषय प्रस्तावना रखते हुए विद्या आश्रम के समन्वयक लक्ष्मण प्रसाद** ने कहा कि यह कार्यक्रम ऐसे समय है जबकि देशभर में पेपर लीक मामले को लेकर युवाओं-छात्रों का आंदोलन चल रहा है। छात्रों के आंदोलन का पूर्ण समर्थन करते हुए इसमें कुछ और बातों को जोड़ने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। जो छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर लिए हैं, आज इस शिक्षा व्यवस्था में उनके साथ घोर अन्याय हो रहा है। बार-बार पेपर लीक हो रहे हैं। छात्र निराश और हताश होते जा रहे हैं। उनका भविष्य बर्बाद हो रहा है। उनकी परीक्षा देने के लिए आवश्यक उम्र की समय सीमा

समाप्त हो रही है। लेकिन यह भी बात सत्य है कि यह आंदोलन सिर्फ पढ़े-लिखे युवाओं का आंदोलन है। इसमें उन सभी युवाओं को जोड़ने की आवश्यकता है, जो लोग शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए। आज इस आंदोलन को और व्यापक बनाने की जरूरत है। जिस प्रकार स्कूल कॉलेज यूनिवर्सिटी से पढ़े लोगों के पास ज्ञान है, उसी प्रकार देशभर में किसानी, कारीगरी तथा अन्य सृजनात्मक और रचनात्मक कार्य में लगे हुए लोग के पास भी ज्ञान है। यूनिवर्सिटी के ज्ञान और समाज में बिखरे ज्ञान के बीच भेद नहीं किया जा सकता। दोनों ही ज्ञान प्रासंगिक हैं। इसलिए देशभर के सभी ज्ञानियों की बात होनी चाहिए। आंदोलन किन्हीं खास मुद्दों को लेकर रहा उसमें और बातों का समावेश होना चाहिए। शिक्षा और रोजगार बहुजन स्वराज के विचार और दृष्टिकोण के अनुकूल कैसे बने आज इस विषय पर चर्चा आमंत्रित है।

यह कार्यक्रम दो सत्रों में चला। पहले सत्र का विषय **"शिक्षा, ज्ञान और रोजगार"** रखा गया। इस सत्र की अध्यक्षता **श्रीमती प्रेमलता सिंह ने की और मुख्य वक्ता एकता शेखर** थीं। **विषय प्रवेश और संचालन का कार्य फजलुर्रहमान अंसारी** ने किया। अन्य वक्ताओं में रविशेखर, एहसान भाई, सुधा दक्ष प्रजापति, नीति, चौधरी राजेंद्र, परमिता ने इस विषय पर बहुजन की दृष्टि को बहुमुखी कोणों से प्रस्तुत किया. राजेंद्र प्रसाद मानव ने एक गीत प्रस्तुत किया। दूसरा सत्र का विषय **"शिक्षा का नया आख्यान और बहुजन स्वराज"** था जिसकी **अध्यक्षता अरुण जी और मुख्य वक्ता राहुल राजभर** ने की. रामजी यादव, धनंजय त्रिपाठी, सुमित सोनकर, कमलेश, ललित, लक्ष्मण, विनोद चौबे, महेंद्र मौर्य,सौरभ और सुधा दक्ष इत्यादि साथियों की बहुमूल्य भागीदारी रही.

**प्रथम सत्र : शिक्षा का ज्ञान और रोज़गार से रिश्ता**

प्रथम सत्र की विषय प्रस्तावना रखते हुए **फजलुर्रहमान अंसारी ने कहा** कि शिक्षा, ज्ञान और रोज़गार एक-दूसरे से जुड़े हुए महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। शिक्षा व्यक्ति को साक्षर और योग्य बनाती है, ज्ञान उस शिक्षा की गहरी समझ और विवेक प्रदान करता है, और रोज़गार उसी ज्ञान व कौशल के आधार पर व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाता है।

सवाल ये नहीं की शिक्षा बुरी है और रोज़गार कम है? सवाल ये है कि क्या हम शिक्षा को ज्ञान में बदल पा रहे हैं ? और ज्ञान को रोज़गार में ? जिस दिन बच्चे क्लासरूम से निकल कर लोकविद्या के आधार पर तर्क करना शुरू करेंगे और जिस दिन डिग्री के साथ स्किल होगी। जिस दिन रोज़गार सिर्फ़ नौकरी न होकर काम करने की आज़ादी बनेगा. उसी दिन ये तीनों एक सी लाइन में आ जाएंगे. वरना हम तीन अलग-अलग दुनियाओं में जीते रहेंगे एक में हम पढ़ते हैं, दूसरे में हम जीते हैं और तीसरे में हम काम ढूंढते हैं. शिक्षा ज्ञान रोज़गार ये तीनों एक दूसरे के पूरक हैं. और तीनों को बराबरी का दर्ज़ा मिलना चाहिए ।

एकता शेखर ने कहा कि जब हम ज्ञान की बात करते हैं तो यूनिवर्सिटी सामने आ जाती हैं। जब ये यूनिवर्सिटी नहीं थे तो क्या पुल नहीं थे? ऐसे बहुत से पुल हैं जिसमें सीमेंट कांक्रीट का प्रयोग नहीं हुआ है। उसे भी ज्ञानी ही बनाए होंगे, फर्क यही कि यह यूनिवर्सिटी का नहीं बल्कि समाज का ज्ञान था। समाज के ज्ञान ने कभी विभाजन पैदा नहीं किया, लेकिन यूनिवर्सिटी के ज्ञान ने समाज में विभाजन पैदा किया है। यूनिवर्सिटी ने जो विकास दिया उसे समाज का विनाश हुआ, प्रकृति का नाश हुआ। लेकिन जो लोग आज भी यूनिवर्सिटी नहीं गए अपने परिवेश में, समाज में रह गए वे लोग बेहतर जिंदगी जी रहे हैं। बिना तनाव के रह रहे हैं। समाज की संरचना के साथ-साथ रोजगार का भी सृजन हुआ है। समाज की यह स्वाभाविक गति है। लेकिन जब से शिक्षा को चहारदिवारी में कैद करने का प्रयास किया गया, यह मुनाफा कमाने का साधन हो गया। एक इंसान का दूसरे इंसान के शोषण की व्यवस्था आज की शिक्षा व्यवस्था है। अगर हम अगरिया समाज को देखें तो इस समाज ने लोहे को बनाने का काम किया और यह लोहा सिर्फ अगरिया समाज ही नहीं बल्कि इसका उपयोग पूरा किसान, बढ़ई, राजमिस्त्री इत्यादि सभी समाज करता था। सृजन का यह कार्य पूरे समाज में खुशहाली का कार्य करता था। एक जगह रोजगार का सृजन होता था तो इससे समाज में हर जगह सृजन के कार्य होने का रास्ता खोल देता था। यह बंधा हुआ ज्ञान नहीं था।

पंचायत में शामिल वक्ताओं के बोलने में जो प्रमुख बातें आईं उनमें यह उभर कर आया कि पढ़ाई नहीं कर पाया वह अज्ञानी और जो लोग पढ़-लिख लिए ज्ञानी कहे जाने लगे हैं। पढ़-लिख लेने के बाद कोई ज्ञानी नहीं होता। वह ज्ञान किसी काम का नहीं होता। लेकिन समाज जो ज्ञान देता है, वह काम का होता है। सभी के सभी शिक्षित बेरोजगार बेकार पड़े हुए हैं, अगर नौकरी ना मिले तो वे किसी काम के नहीं। लेकिन जो लोग किसी भी तरह के किसानी, कारीगरी या अन्य तरह के कार्य को सीखे हैं, उसके बल पर वे काम कर रहे हैं । कौन सा ज्ञान बड़ा हुआ। आज आधुनिक शिक्षा के पीछे लोग दौड़ रहे हैं। किसानों ने जब अपना आंदोलन

चलाया तो ये शिक्षित नौजवान उनके साथ नहीं गए, लेकिन जब छात्रों युवाओं का आंदोलन चला तो किसान उनके साथ आए। छात्रों- नौजवानों को लगता है कि हम काफी आगे बढ़े हुए लोग हैं। जो किसान खेत में, गोबर में,कीचड़ में काम करता है, हम उसके साथ क्यों जाएं? इस दुर्भावना से युवाओं-छात्रों को उबर कर बहुजन समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाना होगा।

बुनकर करघे पर जो काम करता है, वह एक बेहतरीन कला वाला ज्ञान है। इसके साथ-साथ इसमें ताना तनना, रंगाई,कढ़ाई, नक्शा, पत्ता बनाना बहुत सारे काम हैं। यह ज्ञान शायद स्कूल कॉलेज यूनिवर्सिटी या किसी भी संस्थान में नहीं सीखा जा सकता। इसको सीखने के लिए बचपन से ही समर्पित होना पड़ता है। बहुजन समाज के बच्चे जो बुनकारी के काम में लगे हैं, इस काम में महारत हासिल किए हुए हैं। यह काम बहुत बड़े जन समुदाय को रोजगार दिया हुआ है। आज कंप्यूटर आ जाने पर बहुजन समाज के लोग इस नई तकनीकी को भी हासिल कर कंप्यूटर पर तरह-तरह की डिजाइन बना रहे हैं। इस ज्ञान की प्रतिष्ठा यूनिवर्सिटी की ज्ञान की प्रतिष्ठा के बराबर होनी चाहिए।

**दूसरा सत्र :**

**"शिक्षा का नया आख्यान और बहुजन स्वराज"**

दूसरे सत्र की शुरुआत अरुण जी के गीत से हुई. **विषय प्रस्तावना करते हुए रामजनम** ने कहा कि दिल्ली बार्डर का किसान आंदोलन और हाल के जन्तर मन्तर पर नौजवानों के धरने से यह साबित होता जा रहा है कि दिल्ली से देश सम्भाला नही जा रहा है. दिल्ली का इतिहास और पहचान यह पहचान बन गई है कि दिल्ली की सत्ता समाज की स्वायत्त सत्ता को लगातार तोड़ रही है. दिल्ली की वर्तमान सत्ता अनैतिक, अत्याचारी, अन्यायी और लोक विरोधी है मौजूदा राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाओ के चलते इस देश का बहुजन और नौजवान त्रस्त है .

हमारा मानना है कि वर्तमान राज व्यवस्था मे बहुजन युवक युवतियों को रोजगार देने की ताकत नही है और खेतिहर एवं कारीगर समाज को उनके मेहनत और ज्ञान का न्याय संगत मूल्य भी नही मिल सकता यह ताकत बहुजन स्वराज की व्यवस्थओं में बन सकती है. भारत भू-भाग के किसान और नौजवानों का आज का दौर का और हलचल बहुजन की राजनीति, सामाजिक और आर्थिक आदि अनेक क्षेत्रों के नये आख्यान गढ़ने और दिल्ली के सत्ता को वितरित करने के रास्ते बनाने की मांग करता है. विद्या आश्रम के 22 वे स्थापना दिवस पर आयोजित यह बात चीत उसी दिशा मे आगे बढ़ने की पहल है.

आज की व्यवस्था में बहुजन समाज को न तो शिक्षा में जगह है नहीं स्वास्थ्य सेवाओं में, ना ही न्याय व्यवस्था में न्याय पाने की उम्मीद, प्रशासन की व्यवस्था में भी कोई जगह नहीं। देश का युवा बेरोजगार हताश और निराश है, कोई काम धंधा नहीं, कोई भविष्य नहीं। आज की व्यवस्था का पूरा का पूरा ढांचा बहुजन विरोधी है। लोकतंत्र के नाम पर बने इस ढांचे में लोक के लिए जगह नहीं है। व्यवस्थाएं ऊपर से नीचे की ओर थोपी जा रही हैं। आवश्यकता है एक नई व्यवस्था की परिकल्पना और नए आख्यान गढ़ने होंगे.

**दूसरे सत्र के मुख्य वक्ता डा. राहुल राजभर** ने कहा कि अक्सर पढ़े-लिखे लोग कहते है कि समाज बड़ा जटिल हो गया है और परिवर्तन की संभावना कमजोर होती जा रही है. लेकिन यह सच्चाई नही है. आज भी बहुजन समाज बहुत ही सरल है और मूल्यों में आस्था रखता है. बहुजन समाज मे एक ऐसे समाज की संकल्पना है जिसमें सबकी भागीदारी, सम्मान और बराबरी का समाज बन पाने की उम्मीद जिंदा है. बहुजन के महापुरुष, उनके इतिहास और दर्शन की बातें सामने नहीं आने दी जाती हैं लेकिन इनमें परिवर्तन की संभावना है. बहुजन समाज को अपनी पहचान खुद बनानी है. बहुजन की दृष्टि को आगे बढ़कर सामने लाना है. आज की बातचीत से निश्चित ही उर्जा मिलेगी. स्थानीय समाज के आधार पर व्यवस्थाएं बने। विद्यालय में अध्यापकों की आवश्यकताओं को स्थानीय इकाई से पूरा किया जाए। क्षेत्र के ही लोग बच्चों को पढ़ाएंगे। चिकित्सा क्षेत्र में स्थानीय लोग हों। पुलिस और प्रशासनिक व्यवस्था भी अपने क्षेत्र के लोगों द्वारा पूरी हो। इसी तरह से न्याय व्यवस्था से लेकर अन्य सभी व्यवस्थाएं स्थानीय लोगों द्वारा बनाई जाए। ये व्यवस्थाएं स्थानीय पंचायत के अधीन हो और स्थानीय पंचायत को सबसे सशक्त और प्रभावशील बनाया जाय, जिसे हम स्वराज का नाम दे सकते हैं। बहुजन स्वराज की यहां से शुरुआत हो सकती है। दिल्ली देश की व्यवस्था नहीं संभाल पा रही है। अतः वितरित सत्ता की आवश्यकता है।

सभी भागीदारों के वक्तव्यों का शब्दांकन और वीडयो आप विद्या आश्रम की वेबसाईट www.vidyaashram,org पर देख सकते हैं .

•

## बौद्धिक सत्याग्रह

-चित्रा सहस्त्रबुद्धे

यह गौर करने वाली बात है कि जब राजसत्ताएँ साम्राज्य बढ़ाने या एकाधिकार की मंशा और उसे अपनाने की नीतियाँ बनाने लगती हैं तो, वे भोगौलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों को भी इसी मंशा के अंतर्गत पुनर्संगठित करती हैं. दूसरे शब्दों में कहें तो साम्राज्यवादी शक्तियां हर क्षेत्र में विविधता को ख़त्म कर एकाधिकार को स्थापित करने वाले विचारों, नीतियों और व्यवस्थाओं को बनाती हैं. शिक्षा का क्षेत्र अपवाद नहीं है. आज़ादी के बाद हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में साइंस को सर्वोच्च स्थान देकर यही रास्ता अपनाया.

एक ही ज्ञान, साइंस को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसी की शिक्षा के बल पर मोटी तनख्वाह वाली नौकरियाँ उपलब्ध कराने से अन्य सारे ज्ञान के स्रोत सूखने लगे. जबकि **स्कूल-कालेज की दीवारों के बाहर समाज में अनेक तरह के ज्ञान (तर्क, मूल्य सत्ता, आदि पुख्ता आधार के साथ ) अपने लोकहितकारी रूपों में जीवंत हैं, कारगर भी हैं और प्रासंगिक भी.** लेकिन आज़ाद भारत में आधुनिक स्कूल और विश्वविद्यालयों को **'अज्ञान रूपी विस्तृत समाज-पटल' पर चमकते ज्ञान के प्रकाश-स्रोत** के रूप में दिखाया जाता रहा है, जो समाज को ज्ञान-प्रकाश उपलब्ध कराते हैं. ज्ञान-युग में भी यही दृष्टि बरक़रार है. इससे छात्र की समाज के प्रति दृष्टि दूषित हो जाती है. ज्ञान के विस्तृत स्रोत और महासागर से छात्र कभी भी अवगत नहीं हो पाता. वह खुद को समाज से अलग और विशेष समझने लगता है. स्कूल और कालेज की चहारदीवारी के बाहर का समाज अज्ञानी है, सामान्यजन (बहुजन) अज्ञानी है ऐसा मानने लगता है. यही दृष्टि समाज में गैर-बराबरी के बीज बोटी है. आधुनिक शिक्षा और शिक्षा-संस्थान इस गैर-बराबरी को जायज़ बनाती है.

वास्तविकता यह है कि विद्यालय/विश्वविद्यालयों के बाहर समाज में ज्ञान का समृद्ध भण्डार है, जिसे हम **'लोकविद्या'** से पहचानते हैं.

लोकविद्या आन्दोलन आग्रह करता है कि शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी बदलाव के लिए इस मान्यता को स्थापित करना होगा कि **ज्ञान तो समाज में पैदा होता है. समाज तो 'विविध ज्ञान-धाराओं के मिलन से निर्मित विस्तृत लहराता ज्ञान-समन्दर' है.** ऐसी दृष्टि स्थापित करने से एक तो छात्र को ज्ञान का व्यापक विस्तार दिखाई देगा और दूसरा, ज्ञान-सागर में मिलने वाली विविध ज्ञान-धाराओं और उनके ज्ञानियों के प्रति सम्मान और उनसे सीखने का भाव पैदा होगा. विविध ज्ञान धाराओं की जीवंत शक्ति से छात्र का साक्षात्कार होगा, जो सकारात्मक और नैतिक मूल्य गर्भित शिक्षा की बुनियाद भी बना पायेगा.

विविध ज्ञानधाराओं में भाईचारा और लेन-देन की क्रियाएं ही समाज में बराबरी और भाईचारे की बुनियाद बनाते हैं और ज्ञान-सागर को नित नवीन और समृद्ध भी करते हैं.

इस दृष्टि से शिक्षा क्षेत्र में विविध ज्ञान-धाराओं और उनके ज्ञानियों को बराबर के सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ शामिल करने की आवश्यकता होगी. इसके लिए प्रयास करने वाले **बौद्धिक सत्याग्रही कहलायेंगे और इनका कार्य बौद्धिक सत्याग्रह** कहलायेगा.

आइये, बौद्धिक सत्याग्रह की तैयारी करें .

•

## 18वीं और 19वीं सदी में भारत में शिक्षा

गांधीजी का 20 अक्तूबर 1931 को लन्दन की रायल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल अफेयर्स में भाषण हुआ था, जिसमें उन्होंने कहा कि पिछले 50 से 100 वर्षों के दौरान भारत में साक्षरता घट गई है और इसके लिए अँगरेज़ शासन ज़िम्मेदार है. कहते हैं कि उनकी इस टिपण्णी से अँगरेज़ सरकार के हलकों में तहलका मच गया. गांधीजी से सबूत मांगे जाने लगे.

उस समय तो आन्दोलन और फिर गिरफ़्तारी के चलते गांधीजी इसके सबूत नहीं दे पाये, लेकिन उन्होंने सबूत जुटाने की ज़िम्मेदारी कुछ विद्वानों को दी और उनकी बात के सबूत खुद अँगरेज़ अधिकारियों की कुछ रिपोर्टों में पाये गए. 1796 की फ्रा पाओलिनो दा बार्तोलोमियो की "भारत में बच्चों की शिक्षा", 1820 में अलेक्ज़ेंडर वाकर का "भारतीय शिक्षा, साहित्य आदि",

1822-26 में "मद्रास प्रेसिडेंसी के देशज शिक्षा का सर्वेक्षण", 1835-38 की डब्लू. एडम्स की "बंगाल में शिक्षा की स्थिति", 1882 में जी.डब्लू. लाईटनर की "पंजाब में शिक्षा का इतिहास : कब्ज़े के समय से 1882 तक" जैसी रिपोर्टों में उस वक़्त प्रचलित व्यापक शिक्षा के बारे में भरपूर जानकारी मिलती है.

**इन रिपोर्टों के अनुसार हर गाँव में एक स्कूल था. स्कूलों में लिखने, पढ़ने, शिल्प (किसानी, कारीगरी भी) आदि सभी विषयों का व्यवस्थित पाठ्यक्रम था. विद्यार्थियों की संख्या भी कम न थी, सभी जाति के छात्र थे, कहीं कहीं लड़कियां भी संख्या में थीं. इन रिपोर्टों को सार्वजनिक करने की आज ज़रूरत है. वितरित सत्ता के आधार पर प्रभावी ढंग से संचालित ये विद्यालय कैसे थे यह जानना आज भी प्रासंगिक है. इन विद्यालयों के प्रति अंग्रेजों की नीति क्या थी?** इसे गांधीजी ने उसी भाषण में स्पष्ट किया, कहा "... अंग्रेज़ प्रशासकों ने, जब वे भारत आये, यहाँ जैसी व्यवस्थायें थीं उन्हें वैसे नहीं रहने दिया बल्कि उन्हें उखाड़ दिया. उन्होंने ज़मीन को खोदा (इन व्यवस्थाओं को समझने के लिए) और जड़ों को देखना जारी किया और फिर उन्हें वैसे ही सूखने के लिए छोड़ दिया." (शिक्षा व्यवस्थायें मर गईं).

•

## विद्या आश्रम, सारनाथ के स्थापना दिवस के अवसर पर ज्ञान पंचायत में सम्बोधन हेतु पत्र

-राजेश आजाद, जनमुक्ति मोर्चा

प्रिय ज्ञान पंचायत में उपस्थित साथियों, सर्वप्रथम मैं इस जंतर मन्तर दिल्ली पर हुए युवाओं के आन्दोलन को सलाम करता हूँ। लाखों की संख्या में देश के कोने - कोने से छात्र- नौजवान अपनी जायज माँगों को लेकर शान्तिपूर्ण तरीके जन्तर-मन्तर पहुँचे थे । लेकिन बेशर्म कायर मोदी सरकार उनकी माँगों को सुने बिना बर्बरता से उनका दमन किया। अमेरिकी चौधराहट के सामने नतमस्तक मोदी सरकार जो अमेरिकी-भारत मुक्त व्यापार समझौता करके किसान , मजदूर , दुकानदार , व्यापारी बिरोधी नीति बनाने पर तुली है , उसे जरा भी शर्म नहीं आयी , कि अपने ही देश के छात्रों-नौजवानों पर लाठी बरसाने, उनका सिर फोड़ने, आंसू , पैलेट गन चलाने में ।. बावजूद इसके धैर्य, जोश , ऊर्जा और शक्ति से ये स्टूडेण्ट्स का आन्दोलन शान्तिपूर्ण रहा । जंतर-मंतर से उठे उस युवा संघर्ष ने साबित कर दिया कि हमारा नौजवान अब चुप नहीं बैठेगा। पुलिसिया दमन, गिरफ्तारियां जारी हैं फिर भी NEET पेपर लीक हो या शिक्षा नीति की विफलता युवाओं ने व्यवस्था को हिला दिया है । लेकिन जैसा कि आप लोगों ने कहा है कि यह आन्दोलन अब सिर्फ परीक्षा तक सीमित नहीं रह सकता । यह उन करोड़ों बहुजन युवाओं का सवाल है , जो कॉलेज की सीढ़ी तक नहीं चढ़ पाते। मैं स्वयं एक मजदूर-किसान परिवार से आता हूँ और आज M.SC. जूलॉजी की लैब परीक्षा के बीच हूँ । आदरणीय सुनील सहस्रबुद्धे जी का इसमें सहयोग का आभारी हूँ । लेकिन साथियों , मेरी यह उपलब्धि अगर मेरे गाँव के उस मित्र के लिए अर्थहीन है , जो 12 वीं के बाद खेत या फैक्ट्री में चला गया - तो यह शिक्षा व्यवस्था विफल है । इसलिए इस ज्ञान पंचायत के लिए निर्धारित तीनों बिन्दुओं पर मैं अपनी बात रख रहा हूँ :

### ( 1) 'ज्ञान' पर पुनर्विचार

आज की शिक्षा में " ज्ञान ' की जगह ' जानकारी' (information) ने ले ली है । हम रटते हैं , समझते नहीं । उदाहरण खेती का लेकर देंखे कि जानकारी और ज्ञान क्या हैं, इनमें क्या फर्क है. जानकारी (information) है कि "इस वर्ष बाजार में गेहूँ का भाव 25 रूपये किलो है । मौसम विभाग ने बताया है कि 15 जुलाई को बारिश होगी " यह एक डेटा है , एक सूचाना है । ज्ञान ( knowledge ) : " गेहूँ की यह किस्म इस मिट्टी में क्यों कम उपज दे रही है ? इस बारिश का समय बदलने से हमारी फसलों पर क्या असर पड़ेगा ? और सबसे बड़ी बात- बाजार में भाव कौन तय करेगा ? क्या हम किसान मिलकर अपनी सामूहिक मंडी बना सकते हैं ताकि 25 रूपये नहीं, 40 रुपये किलों मिले ? " ( इसमें गहराई, विश्लेषण और परिवर्तन की योजना है - यह ज्ञान है ।) दूसरा, उदाहरण NEET की परीक्षा का और आन्दोलन का लें कि NEET का पेपर लीक हुआ । शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा । सैकड़ो छात्र-छात्रा अरेस्ट हुए हैं । यह अखबार की खबर है - यह जानकारी है ।

लेकिन यहाँ 'ज्ञान ' कहाँ है ? पेपर लीक होना एक लक्षण है । असली बिमारी क्या है ? कोचिंग का शार्टेज , महंगी फीस , और नौकरियों की कमी किस तरह इस मुकाबले के लिये धकेलती है? अगर शिक्षा व्यवस्था बदले बिना शिक्षा मंत्री बदल दिया, तो क्या दोबारा पेपर लीक नहीं होगा? ऐसे तमाम सवालों, कारणों, मूल समस्याओं व उनके समाधान की दिशा समझना - यह ज्ञान है ।

इसीलिए आज का शिक्षित यूथ जानकारी से भरा हुआ है (तारीख, फार्मूला, धारा- कानून तो जानता है ),

लेकिन उसे ज्ञान नहीं दिया जाता- जो सवाल पूछे कि " यह व्यवस्था किसके लिए काम करती है ?" यही कारण है कि M.Sc. करने वाला मैं भी अपने उस साथी को अनपढ़ नहीं मानता जो सरकार की जनविरोधी नीतियों का विरोध करना जानता है, बाल्कि वह ज्ञानी है । इसलिए , हमे शिक्षा में जानकारी (रट्टा ) कम, ज्ञान ( चिंतन-मंथन) ये ज्यादा चाहिए । ज्ञान ही बहुजन स्वराज की बुनियाद है । ज्ञान की इसी बुनियाद से सवाल उठेगा कि क्या ज्ञान केवल अंग्रेजी या संस्कृत की किताबों में बंद है? क्या मेरी दादी-काकी की खेती-किसानी की समझ, मेरे गांव छोड़कर गये दोस्तों की मजदूरी की कुशलता, या गांव के पंचायत का लोकतांत्रिक अनुभव- यह ज्ञान नहीं हैं ? हमें उस 'ब्राहमणवादी-एंग्लो व्यवस्था की बेड़ियों को तोड़नी होगी-जहाँ एक तरफ जाति के नाम पर ज्ञान और श्रम (खेती, मजदूरी, कारीगरी, बुनकरी..) को बाँटा गया, और दूसरी तरफ, अंग्रेजी के नाम पर मेधा को कुचला गया । आज के कोचिंग सेंटर , NEET, UPSC का सिलेबस/पैटर्न सब ब्राह्मणवादी - एंगलो सोच पर चलता है, जो रट्टू तोतों को तो चुनता है , लेकिन मजदूर-किसान-कारीगर-बुनकर-कुम्हार आदि के बच्चों के मौलिक सोच को खारिज कर देता है ।

### (2) शिक्षा और नौकरी को एकमात्र रास्ता न बनाया जाए

हम युवाओं को बचपन से सिखाते हैं कि 'पढ़ों वरना भैस चराओगे'। पढ़ो-लिखों-नौकरी पाओ. लेकिन जब नौकरी नहीं मिली तो? वही युवा आत्माहत्या, कर लेता है या आन्दोलन में उतरता है? क्या यह सब सामान्य है? आज की शिक्षा बच्चों को नौकरी का भूखा बना रहीं है , 'सपनों का मालिक' नहीं। यह कैसी शिक्षा व्यवस्था है जो एक 'भूख' पैदा' कर रही है-सरकारी नौकरी की भूख, मोटी सैलरी की भूख, समाज में ऊँची डिग्री वाला कहलाने की भूख। यह भूख कभी शांत नहीं होती क्योंकि लाखों के मुकाबले नौकरियाँ सिर्फ हजारों हैं। हमें अपने सपनों का मालिक बनने के लिये ऐसी शिक्षा चाहिए जो आत्मनिर्भर बनाए, और हमारे हुनर की पहचान करना सिखाए, हमें बताए कि जो हमारे पास मिट्टी, हाथ, कला, संघर्ष मौजूद हैं , वही हमारी असली पूँजी है । हमें NEET, UPSC,... जैसी परीक्षाओं में नौकरी के लिये भूखे, तरसते युवा पीढ़ीं में जिंदा सपनों को दिखाना होगा। उसका मालिक बनें। हमें शिक्षा को सेवक नहीं, बल्कि जीवन का आधार बनाना होगा। किसान, मजदूर, बुनकर, कारीगर, कलाकार--- इन सबका अपना सम्मान और आर्थिक-सुरक्षा होनी चाहिए । सरकार व समाज़ को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि

(i) हर हाथ को काम मिले या, हर युवा को न्यूनतम आय (Basic income) उचित बेरोजगारी भत्ता मिले।
(ii) कौशल (skill ) को डिग्री के बराबर मान्यता मिले।
(ii) कृषि मजदूरी, कारीगरी, कलाकार, बुनकर आदि सबको कुशल श्रम का दर्जा देकर न्यूनतम आय की गारण्टी की जाय।
(iv) गाँव-कस्बों में उद्योग, खेती , सेवा जैसे क्षेत्र में लाखों रोजगार सृजन किया जाय ।

### (3) शिक्षा का नया आख्यान = बहुजन स्वराज :

शिक्षा में सुधार् सिर्फ पाठ्यक्रम बदलने का नाम नहीं है यह पूरी राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था का सवाल है। आज शिक्षा पर जो सत्ता है -वह उच्च जाति , पूँजी और शहरी वर्ग के हाथों में है। वे वही आख्यान लिखते हैं जिससे उनका वर्चस्व बना रहे। हमारे बहुजन स्वराज का मतलब है -शिक्षा को गाँवों से जोड़ा जाय , और फैक्टरीयों से जोड़ा जाय। जहाँ खेत , तालाब , जंगल , कारीगरी .... से शिक्षा को जोड़कर गाँव को क्लास रूम बना दिया जाय और वहाँ की मिट्टी को पाठ्यपुस्तक। जहाँ बच्चा न तो गाँव से पलायन करना चाहें और न ही गाँव उसे 'बेकार ' समझे। बाल श्रम शोषण से बचते हुए फैक्टरी को शिक्षा से जोड़ा जाय और शिक्षा को फैक्टरी से।

- शिक्षा का नियंत्रण किसान सभा और मजदूर संघ करें
- पाठ्यक्रमों में डा. अम्बेडकर, फुले, पेरियार, कबीर , बुद्ध और अपने लोक संघर्षों का इतिहास पढ़ाना।
- आर्थिक नीति ऐसी बने कि शारीरिक या मानसिक श्रम करने वाला बेरोजगार न हो बल्कि शिक्षा-रोजगार सृजन करें।
- महिलाओं, दालितों, आदिवासियों और पिछड़ों को नेतृत्व में लाना-क्योंकि वे जानते हैं कि असली समस्या क्या है?

अंत में, प्रिय साथियों,

मैं अपने लेबोरेटरी में हूँ लेकिन मेरा मन आज उन करोड़ों युवाओं के साथ हैं । जो परीक्षा ही नहीं दे पाते। मेरी आवाज उनके लिए है , जो कालेज नहीं पहुंचे ,जिनके पसीने पर यह देश चलता है। आईए, ज्ञान को लोकतांत्रिक बनाएं। रोजगार को कृपा नहीं ,अधिकार बनाये। कौन बनाता हिन्दुस्तान-भारत का मजदूर किसान .

•

# कविता
# शिक्षक

-रामावतार सिंह

यह कविता रामावतार सिंह के फेसबुक से ली गई है. बहुजन की दृष्टि से सुन्दर कवितायें लिखते हैं. यह कविता शिक्षा-क्षेत्र पर चिंतन के कुछ बिन्दुओं को बख़ूबी से खोलती है.

**अगर तुम**
**मिट्टी को समझे बिना**
**कोई बीज रोपते हो**
**तो निश्चित ही अपनी**
**अज्ञानता थोपते हो.**

**असल में तो मिट्टी ही ज़रूरी है**
**बीज तो महज मजबूरी है.**
**जो तुम्हारे न चाहने पर भी**
**जा गिरेगा कहीं न कहीं.**
**यह मिट्टी की मर्जी है कि**
**वो उगेगा की नहीं**
**और बीज तो चिड़िया भी बोती है**
**पर इसका गुमान नहीं करती .**
**शिक्षक होने का**
**अभिमान नहीं करती.**

**तुम सिखा नहीं सकते**
**सिर्फ दिखा सकते हो.**
**जो तुमने हासिल किया**
**उसे लिखा सकते हो .**
**ताकि जाँच सको**
**अपने रटाने का फल**
**और छाँट सको**
**सफल-असफल.**

**हाँ, यह उचित है कि तुम**
**अपना हासिल किया बांटो**
**पर कोई न ले तो उसे क्यों डाटो?**

**किसी को राह दिखा सकते हो**
**प्यास लगे तो**
**कुआँ बनकर बुझा सकते हो.**
**पर यक़ीन करो कि**
**प्यासा खुद कूएँ के पास आयेगा**
**व्यर्थ बहकर तो कूआँ ही सूख जायेगा!**

**यह भी रखना याद कि**
**धरती पर सिर्फ कूएँ ही नहीं**
**तालाब, नदिया और सागर भी हैं.**
**तुम तो मात्र बूँद हो**
**यहाँ अथाह महासागर भी है.**

-रामावतार सिंह के फेसबुक से साभार

# शिक्षा में पुनर्विचार

-आर्यमान और इरिना, पगडंडी संगठन

देश में चल रहे युवा आंदोलन ने हम सब को शिक्षा और युवाओं के भविष्य पे सोचने को मजबूर कर दिया है। तत्कालीन मुद्दा NEET एग्ज़ाम में पेपर लीक का है लेकिन आंदोलन में दिख रही ऊर्जा बताती है की बात उस से ज़्यादा गहरी है। उस गहराई में जा के सवालों को उठाना ज़रूरी है।

क्या नीट का इम्तिहान ठीक से होने लगेगा तो शिक्षा व्यवस्था देश के युवाओं के प्रति न्यायपूर्ण बन जाएगी?

हर साल लाखों युवा नीट, iit, upsc, teacher इत्यादि के इम्तिहान लिखते हैं। बनारस, लखनऊ, दिल्ली जैसे शहरों में रेंट देते हुए अपनी जिंदगी के, अपनी युवा अवस्था के कीमती साल निकाल देते हैं। और ये सब किस चीज के लिए?

इस शिक्षा तंत्र में चंद सौ-हज़ार लोगों से ज़्यादा की जगह नहीं है। बाकी लाखों लोग हर साल फेल्योर बन के रह जाते हैं। कुल मिला के ये व्यवस्था फेल्योर बनाने का तंत्र है। ये व्यवस्था एक समाज को निराश बनाने की व्यवस्था है। ये व्यवस्था समाज को 1% और 99% में बाटने वाली व्यवस्था है।

हम क्यों इस रेस में दौड़ रहे हैं? क्या कॉलेज और यूनिवर्सिटी हमें न्यायपूर्ण शिक्षा दे सकते हैं? हमें इस तंत्र की बुनियाद को जरा परखना पड़ेगा। आज गोवा में किसानों का एक बड़ा संघर्ष चल रहा है। एक नया IIT बनाने के लिए सरकार किसानों की ज़मीन छीन रही है। लेकिन किसान अपनी ज़मीन नहीं छोड़ना चाहते हैं। गोवा के किसानों का संघर्ष हमें सोचने को मजबूर

करता है - आख़िर तमाम IIT और University के कैंपस किस की ज़मीन पे बने हैं? हर आधुनिक कॉलेज गाँव से जमीन छीन के दीवार खड़ी कर के, सिक्योरिटी गार्ड द्वारा स्थानिया लोगों को बाहर रख के चंद छात्रों को जमीन से बिछड़े ज्ञान का उपभोगता बनाता है। जिस तंत्र की बुनियाद में ही अन्याय है, वो क्या हमें न्याय पूर्ण शिक्षा व्यवस्था दे सकती है? क्या शिक्षा पाने का यही तरीका है? क्या हमारे पास और कोई तरीके नहीं हैं?

इस शिक्षा तंत्र के बदौलत हम क्या हासिल कर पाए हैं? आज सब से ज़्यादा संख्या में बेरोजगार वो लोग हैं जो यूनिवर्सिटी से डिगरी ले कर बैठे हैं। जो यूनिवर्सिटी नहीं जा पा रहा है वो भी निराश है, जो कुछ लाखों रुपये खर्च कर जा चुका है वो भी निराश ही है।

और इस तंत्र के श्रेष्ठ छात्र कौन हैं? आज भारत से निकले लोग अमरीका की बड़ी कंपनियों में CEO जैसे नेतृत्व के बड़े पदों पे बैठे हैं। हमें बताया गया है कि ये भारत के लिए एक गर्व का विषय है। लेकिन आख़िर इन का योगदान क्या है? चीन का बाज़ार अमरीकी कंपनियों के लिए बंद है, और भारत का बाज़ार उन के लिए खुला है। भारत उन के लिए सब से बड़ा बाज़ार है। इस बाज़ार में अपना कारोबार जमाने के लिए इन कंपनियों ने अपने मुख्य शेरपा की तरह भारत के इन श्रेष्ठ छात्रों को रखा हुआ है। यानी कि ये तथाकथित श्रेष्ठ छात्र असल में श्रेष्ठ ग़ुलाम हैं, और बाक़ी देश को विदेशी कंपनियों का गुलाम बनाने के काम में अपना सहयोग दे रहे हैं। अनेक माँ-बाप को कंप्यूटर की स्क्रीन पे और बच्चों को स्मार्टफोन की स्क्रीन पे आश्रित बनाना इस की सिर्फ़ एक मिसाल है।

गुलामी की बात से याद आता है, हमें शायद एक और सवाल पूछना चाहिए। इस शिक्षा व्यवस्था का इतिहास आखिर क्या है? इस की शुरुआत कहाँ से हुई? ये कहाँ से आया?

स्कूल और कॉलेज एक खास ज्ञान परंपरा की शिक्षा व्यवस्था है। इस का आगमन यूरोप से अंग्रेज़ सत्ता की देख रेख में हुआ और ये वहाँ के शास्त्री प्रशिक्षण परंपरा से जुड़ा हुआ है। ये वहां से कुछ खास देखने और सोचने के तरीके ले के आया है। भारत में उस का एक खास प्रयोग भी था। अंग्रेज शासन के सामने 19वीं शताब्दी में एक बड़ी चुनौती थी कि वे बाहर से आए हुए कुछ हज़ार लोग थे और उन्हें करोड़ों स्थानीय लोगों पे अपना शासन जमाना था। जंग जीतना एक बात होती है और राज क़ायम रखना एक और बात। इस दूसरे मकसद को पूरा करने के लिए जरूरी था भारतीयों में गुलाम मानस का निर्माण करना, और इस का सब से असरदार जरिया था एक नई शिक्षा नीति। इंसान को बचपन से ही गुलाम और यूनिवर्सिटी किसी ना किसी गाँव से जमीन छीन के बनाए गए हैं। यूनिवर्सिटी उस तंत्र का नाम है जो किसी बना दिया जाए, तो उस से बढ़िया शासक के लिए क्या हो सकता है?

इस शिक्षा को पहले राजाओं के बेटों पे, बड़े पंडितों के बेटों पे और बड़े व्यापारियों के बेटों पे लागू किया गया और बाद में 'न्यायपूर्ण' बनाने के बहाने से बेटियों पे और अन्य वर्ग और जातियों के लिए भी। आज भी अन्य जाति के लोग इस गुलामी की शिक्षा में अपना स्थान बनाने की उम्मीद में संघर्ष कर रहे हैं। और शिक्षा के क्षेत्र में सब से बड़े सवालों में यह है कि इस शिक्षा में किस की कितनी जगह होनी चाहिए।

इस गुलाम मानस पैदा करने वाली शिक्षा का प्रभाव यह रहा कि आजादी के बाद भी भारत के नेता इस ही बात से जूझते रहे कि इस शिक्षा व्यवस्था को अधिक से अधिक बच्चों तक कैसे पहुंचाया जाए। सरकार के विरोधी भी इस ही बात की आलोचना करते हैं कि इस शिक्षा व्यवस्था को ज़्यादा करोड़ रुपये का बजट क्यों नहीं दिया जा रहा।

इस शिक्षा व्यवस्था ने आज तक कुल मिला के क्या हासिल किया है? उस ने यह हासिल किया है कि किसान और कलाकार के बच्चों से ले के अफ़सर और टीचरों के बच्चों को – मात्र 10-12 साल में – आज्ञाकारी उपभोगता के रूप में तैयार किया है। आधुनिक शिक्षा छात्रों को मात्र काग़ज़ी ज्ञान के उपभोगता बना रही है और अध्यापकों को सर्विस प्रोवाइडर। ऐसा उपभोगता जो अपनी ज़िंदगी के लगभग हर पहलू के लिए बाज़ार या सरकार पर निर्भर होता है। जो ना अपने लिए खाना उगाना जानता है ना बनाना। जिसे यह नहीं पता की उसके कपड़े, रोज़ मर्रा की वस्तुएँ, या फिर उसका घर कैसे बनते हैं। जो अपनी और दूसरों की सेहत के बारे में बिकुल अनजान है। जिसे अपने आस पास के पेड़, पौधे, पंछी, जानवर, नहर, नदी, जंगल, गांवों और समाज से कोई परिचय नहीं है। यदि गलती से कोई इन बातों का कोई ज्ञान रखता है तो वो उस शिक्षा व्यवस्था के बावजूद रखता है, ना कि उस के बदौलत।

इस के विपरीत, सही शिक्षा हमें दुनिया में सहजता से जीना सिखाती है, वो हमें अपने स्थानीय संसाधनों के समझदार उपयोग से समृद्ध जीवन की और ले जाती है। ऐसी शिक्षा असुरक्षा की भावना को दूर रखती है। इस में अक़्ल के साथ साथ शरीर और मानस का विकास भी उतना ही महत्व का है। हम अपने संसाधन कैसे जुटाएँ, संपदा कैसे संजोए, एक दूसरे का ख़याल कैसे रखें, ये सब उस के महत्वपूर्ण आयाम हैं।

यहां पर एक मूल सवाल पूछने की जरूरत है। ज्ञान क्या होता है और वो कहाँ पाया जाता है? क्या ज्ञान ऐसी पानी की बूंदों का नाम है जो उन बादलों से गिरती हैं जो

सिर्फ यूनिवर्सिटी कैंपस के ऊपर पाये जाते हैं और जो सीधे जा के प्रोफेसरों के सिर पे टपकती हैं? क्या प्रोफेसर लोग अपनी दिमाग की टोकरी छत पे खड़े हो कर इन बूंदों को बटोरते बैठते है? और तभी जा के क्लासरूम में बाँटते हैं?

ज्ञान तो वो है जो हर बुनकर के पास है और हर कुम्हार के पास है, हर कारीगर और हर किसान के पास है। यानी ज्ञान हर जगह पाया जा सकता है। ज्ञान शहरों के गली और मोहल्लों में पाया जा सकता है, वो घाट पे, पर्वत पे पाया जा सकता है, वो जंगल में और रेगिस्तान में पाया जा सकता है, वो गांव देहात के हर कोस पे पाया जा सकता है। अक्षर ज्ञान ज्ञान की सिर्फ एक श्रेणी है और उसे भी यूनिवर्सिटी की चार दीवारी में कैद रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब हम इस बात को मानने लगेंगे, तब हम पाएंगे कि ज्ञान कोई दुर्लभ चीज़ नहीं है, और यूनिवर्सिटी के पास उस का कोई ठेका नहीं है। जब हम ज्ञान की सही पहचान करेंगे तो हम ज्ञान का अभाव महसूस करना छोड़ देंगे। उस के लिए परेशान होना बंद कर देंगे। उस के लिए भीख मांगना बंद कर देंगे। उस के लिए रेस दौड़ने के लिए परेशान होना बंद कर देंगे।

आज शिक्षा को नियंत्रित करने के क्या क्या तरीके हो सकते हैं, हमें इस पे पुनर्विचार करना होगा। हमें लगता है कि हर सुलभ स्थान पे ज्ञान के मंदिर प्रफुल्लित होने की संभावना है, और ये कोई मुश्किल बात नहीं है। हर समाज में सयाने, समझदार लोग मौजूद हैं, जो अपने समाज के ज्ञान को संजो के रखने का काम कर सकते हैं, और यदि उन को मौक़ा मिले, तो वे उस काम को ज़िम्मेदारी से करना चाहेंगे। जिस तरह गणेश पंडाल और दुर्गा पंडाल लगाने का चंदा समाज में से निकल आता है, वैसे ही इस लोकविद्या शिक्षा व्यवस्था के लिए भी निकाला जा सकता है। बल्कि गणेशोत्सव और दुर्गा पूजा जैसे अवसर भी सीखने-समझने के मौके बनाए जा सकते हैं जिस में कारीगरों के काम को देखने से ले के उस की अर्थव्यवस्था परखने पर और पंडालों पे बात-चित तक की शिक्षा की प्रक्रियाएं संभव हैं। इस प्रकार पूरे पूरे शहर और पूरे पूरे गाँव हमारे यूनिवर्सिटी समान हो सकते हैं। हर शहर में आज कई घर मिल जाएँगे जो कि साल भर नहीं तो कई महीने खाली ही पड़े रहते हैं। ऐसे स्थानों को चिह्नित करते हुए रहने-सहने की व्यवस्थाएँ भी कम खर्च से चलाई जा सकती है। हमारे देश में ब्राह्मणों को खाना खिलाना वैसे भी पुण्य का काम माना गया है। इस को लोक शिक्षा परंपरा क़ायम रखने के एक लोक परंपरा की दिशा में ले जाया जा सकता है। शहर और गाँव के अलग अलग घरों को ये मौक़ा दिया जा सकता है कि वे सीखने और सिखाने वालों को बारी-बारी भोजन-पोषण प्रदान करें।

इस प्रकार सरकारों और कंपनियों के अतिरिक्त जा के शिक्षा की एक शानदार व्यवस्था बहुत आराम से बनाई जा सकती है। ऐसी शिक्षा के लिए कोई बहुत बड़ा बजट नहीं चाहिए और कोई बड़ी संस्था नहीं चाहिए। पगडंडी संगठन इस दिशा में कार्यरत है। पिछले कुछ सालों से हम युवाओं के बीच इस तरह के सीखने-समझने के कार्यरमा करते आए हैं जिन में हम ने किसानों के साथ, कारीगरों के साथ सीखा है, उन की उपस्थिति में अर्थव्यवस्था और नीति निर्माण जैसे विषयों पे शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के साथ चर्चाएं चलाई हैं। ये सब बिना फीस मांगे, समाज से ही चंदा माँग के किया है। यदि आप इन विचारों से और इस काम की दिशा से सहमत हैं, तो आइए हम बैठ के बात करें। आज ज़रूरत है कि हम शिक्षा का आयोजन अपने हाथों में ले। किसी सरकार या उद्योगपति का इंतज़ार करना व्यर्थहै.

•

## निमंत्रण/घोषणा
## बहुजन स्वराज पंचायत की दूसरी कड़ी
## 2,3,4 दिसंबर 2026
## गांधी भवन, छतरपुर (मध्य प्रदेश)

प्रिय सह-साधक,

उपरोक्त त्रि-दिवसीपंचायत में आप सादर आमंत्रित है।

यह निमंत्रण ढाई महीना पहले ही भेजा जा रहा है जिस से आप उन दिनों अन्य कार्यक्रमों से टकराव टाल सकेंगे और अपनी यात्रा से संबंधित रिजर्वेशन आदि एडवांस में कर सकेंगे। हम आशा करते हैं कि आप पंचायत के एक सप्ताह पहले अपनी उपस्थिति कन्फर्म करेंगे।

उपरोक्त पंचायत के आयोजक मोटे तौर पर 1980 के दशक से देश भर में उभरे किसान आंदोलन, PPST (Patriotic People-oriented Science and Technology) अभियान, लोकविद्या जन आंदोलन आदि आंदोलनों के सहभागी रहे हैं तथा विद्या आश्रम, वाराणसी से सांगठनिक रूप से जुड़े रहे हैं। इन आंदोलनों तथा इस दौरान हुए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर हमारा समूह लगातार संवाद करते आये

है और एक साझी समझ पर पहुंचने के प्रयास करते आये हैं।

इस पंचायत के आयोजन में गांधी भवन छतरपुर का पूरा सहयोग हमे प्राप्त है। इसके लिए हम श्री संजय सिंह व सुश्री दमयंती पानी के आभारी हैं। छतरपुर और आसपास के कई सामाजिक कार्यकर्ता इस पंचायत में शामिल होंगे

## बहुजन स्वराज पंचायत के विचारणीय मुद्दे

### बहुजन कौन है? क्या हम स्वयं को बहुजन मानते है? स्वयं को बहुजन मानने के मायने क्या हैं?

बहुजन से हमारा तात्पर्य है सामान्य जीवन जीने वाले सामान्य लोग। जो स्वयं को विशिष्ट नहीं मानते हैं, न ही विशिष्ट होने का दावा करते हैं। राजसत्ता के वे हिस्सेदार नहीं है; बल्कि सत्ता के सताए हुएं हैं। कॉलेज, विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, आदि संगठित ज्ञान की संस्थाओं के बाहर, अपने अनुभव और समाज में मौजूद असंगठित ज्ञान के स्रोतों से अर्जित अपनी समझ, कौशल और विद्या (अर्थात लोकविद्या) के बदौलत वे जीवनयापन करते हैं। बहुजन में मुख्य रूप से किसान, कारीगर, आदिवासी, महिला, छोटे व्यापारी और छोटे उद्यमी आते हैं जो असंगठित और वितरित उत्पादन-वितरण प्रणालियों के हिस्सेदार हैं। लेकिन जरूरी नहीं कि बहुजन इन्हीं श्रेणियों से ही आयें; सामान्य जीवन जीनेवाले सब लोग बहुजन हैं। बहुजन की परिभाषा करना अपेक्षतया आसान है। लेकिन असल चुनौती स्वयं को बहुजन के रूप में पहचानना और जीना है। स्वयं को मूल रूप से बहुजन मानने के मायने क्या हैं? क्या हम बहुजन की मूल पहचान स्वीकारने के लिए तैयार हैं?

बहुजन की तकदीर कौन तय करते हैं? अपनी तकदीर तय करने का अधिकार क्या बहुजन स्वयं अपने हाथ में लेंगे?

### बहुजन स्वराज से हम क्या समझते है?

हमारे देश में सत्ता और ज्ञान पर विशिष्ट (स्वयं को विशिष्ट होने का भ्रम पालनेवाले) लोगों का एकाधिकार रहा है। चाहे वे पश्चिमी सोच, सभ्यता, या ज्ञान से जुड़े विशिष्ट लोग हों, या भारत की ब्राह्मणवादी परंपरा से जुड़े विशिष्ट लोग हों, दोनों लोग सोचते हैं कि विशिष्ट लोग होने के नाते उन्हीं का दायित्व है कि वे बहुजन को प्रगति और विकास के मार्ग पर आगे ले जाएं, उनका मार्ग दर्शन / नेतृत्व करें और उन पर राज करें। संक्षेप में बहुजन की तकदीर तय करने का अधिकार विशिष्ट जनों ने स्वयं अपने ऊपर ओढ़ लिया है। पर आज बहुजन जाग रहे हैं। स्वयं की खुशहाली क्या है और उसे प्राप्त करने का मार्ग क्या है यह तय करने की जिम्मेदारी कोई विशिष्ट वर्ग, संस्था या सरकार पर छोड़ने की बजाय बहुजन अपनी तकदीर अपने हाथ में लेना चाहते हैं। क्या वे ऐसा कर पाएंगे? बहुजन स्वराज की संभावनाएं बहुत कुछ इस मुद्दे पर निर्भर है।

स्वयं की खुशहाली का मार्ग स्वयं ढूंढना, उसे खुद हासिल करना, यही स्वराज है। एक दूरगामी लक्ष्य न होकर, स्वराज एक सतत प्रक्रिया है, जिसका अभ्यास हमें वर्तमान में हर रोज़ करना है। स्वराज के इस सतत अभ्यास में अहिंसा, भेदभाव विहीन सहजीवन, न्याय, त्याग और भाईचारा हमारे मार्ग दर्शक सिद्धांत हैं। बहुजन स्वराज का यह मार्ग चुनौतीपूर्ण हैं। एक बड़ी चुनौती बहुजन का जन्म से जुड़ी पहचान के आधार पर बंटना और भेदभाव का शिकार होना हैं। बहुजन को बांट कर उनपर राज करने की विशिष्ट जन की नीति बहुत पुरानी है। समाज में व्याप्त भेदभाव दूर करने के लिए हजारों वर्षों से संत और ज्ञानी संघर्ष करते आये हैं। उन से हमे प्रेरणा लेनी होगी। जब तक बहुजन स्वराज स्थापित नहीं होगा, यानी जब तक सत्ता विशिष्ट जन के हाथ में रहेगी, बहुजन के आपसी भेदभाव मिटाना हमारे लिए एक बड़ी चुनौतीपूर्ण कार्य रहेगा।

### विविधता और भेदभाव में फर्क

भेदभाव और विविधता के बीच का फर्क समझना जरूरी है। यह तार्किक लगता है कि जैसे विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में वनस्पति और प्राणी विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं, उसी प्रकार विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में मानव समाज भी विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं। मतलब स्थल काल के अनुरूप मानव समाज भी विविधता के साथ प्रकट होते हैं। यह विविधता शारीरिक रूप रंग, वेश भूषा, खान पान, संस्कृति आदि में झलकती है। लेकिन धोखा तब होता है जब हम विविधता को आधार बनाकर भेदभाव करने लगते हैं। हम बहुजन यह कतई नहीं मानते हैं कि विभिन्न मानव समाजों के बीच पदानुक्रम या ऊंच नीच की कोई श्रेणीबद्धता है। लेकिन सत्ता पाने और सत्ता पर काबिज रहने के लिए विशिष्ट जन मानव समाजों के बीच भेदभाव करते हैं और एक दूसरे से लड़ाते हैं। मानव समाजों के बीच पदानुक्रमता के सारे आख्यान हमें नकारना होगा। भेदभाव विहीन तरीके से विविधता को स्वीकार कर उसके साथ जीने की कला - सह जीवन की कला - हमे अपनानी होगी। क्या यह संभव है? विभिन्न नस्ल, धर्म, भाषा, व्यवसाय के लोगों के बीच - गोरे और काले, आदिवासी और गैर आदिवासी, किसान और व्यापारी, स्त्री और पुरुष - इनके बीच भेदभाव करना क्या हम छोड़ सकेंगे?

## स्वराज हेतु संयम और साधना करने के लिए क्या हम तैयार हैं?

विविधता के साथ भेदभाव विहीन सहजीवन तभी संभव है जब बहुजन स्वशासित और स्व-अनुशासित जीवन जियेंगे। एक व्यक्ति के स्वराज के कारण दूसरे व्यक्ति के स्वराज का हनन नहीं होना चाहिए, न ही एक समूह के स्वराज के कारण दूसरे समूह के स्वराज का हनन। अत: स्वराज के साथ स्व-संयम अभिन्न रूप से जुड़ा है। और संयम आधारित स्वराज के लिए निरंतर अभ्यास या साधना आवश्यक है। अर्थात, साधना का विषय है स्वराज। इसीलिए हमने आपको सह-साधक संबोधित किया है। क्या हम स्वराज-साधना के लिए तैयार हैं?

## क्या आज के ग्राम पंचायत और स्थानीय स्वशासन की अन्य इकाइयां बहुजन स्वराज के आधार स्तंभ बन सकते हैं? इसकी क्या संभावनाएं हैं?

हमारी परंपरा में पंचायत सामाजिक गतिविधि का केंद्र तथा सामूहिक विचार विमर्श और निर्णय का स्थान रहा है। पंचायत में पंच परमेश्वर के मार्गदर्शन में सर्वसम्मति से निर्णय लिए जाते हैं। भले ही इसमें विकृतियाँ रहीं हों फिर भी बहुमत का अल्पमत पर वर्चस्व स्थापित करनेवाली आधुनिक लोकतांत्रिक परिपाटी की तुलना में पंचायत कहीं ज्यादा स्वराजोन्मुख है। स्वराज में पंचायत के इस महत्वपूर्ण भूमिका की ओर इंगित करने के लिए ही हमने कार्यक्रम को पंचायत का नाम दिया है।

जहां पंचायत गैर सरकारी सामाजिक अभिव्यक्ति की जीवंत परंपरा के रूप में आज भी विद्यमान है, वहीं स्थानीय स्वशासन की इकाई के रूप में ग्राम पंचायत को संविधान के 73वाँ संशोधन के माध्यम से संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। बहुजन स्वराज में इन पंचायती संस्थाओं की सकारात्मक भूमिका क्या हो सकती है इस पर सोच विचार करने की आवश्यकता है। हम मानते हैं कि ग्राम पंचायतों को और स्वशासन की अन्य स्थानीय इकाइयों को बहुजन स्वराज के आधारभूत स्तंभ बनाए जा सकते हैं। इसे संभव बनाने के लिए पंचायती संस्थाओं को कौनसे संवैधानिक अधिकार अतिरिक्त दिए जाएं, और उन्हें आर्थिक रूप से कैसे सशक्त बनाए जाएं ये विचारणीय मुद्दे हैं। उदाहरण के लिए वोटर लिस्ट तैयार करना, नागरिकता की पुष्टि करना, खाद्य सुरक्षा/संप्रभुता की गारंटी देना, स्थानीय संसाधनों का प्रबंधन करना ऐसे बहुत सारे कार्य हैं जो पंचायतों के अधिकार क्षेत्र में लाये जा सकते हैं। विशेष रूप से लोकतंत्र के सबसे मौलिक और सशक्त पायदान के रूप में ग्राम सभाओं को पुनर्जीवित करना बहुजन स्वराज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

सबसे बड़ी समस्या ग्राम पंचायतों की चुनावी प्रक्रिया और ग्रामपंचायतों में निर्णय लेने की विधि को लेकर है। पंचायत सदस्य और सरपंच के चुनाव बहुमत के आधार पर करने की वर्तमान परिपाटी का नतीजा यह है कि जीतनेवले और हारनेवाले प्रत्याशियों के बीच कटुता के चलते गांव में गुटबाजी पनपती है। सबसे अधिक वोट पानेवाले प्रत्याशी को जिताने की पद्धति त्यागने के बारे में भी सोचना होगा। पंचायत सदस्यों के बीच सर्वसम्मति से निर्णय लेने की पंचायती परंपरा की पुनः स्थापना करनी होगी। पंचायतों पर सरकारी तंत्र - जिलाधिकारी और उनके नुमाइंदे - का दखल और तानाशाही खत्म करने होंगे। पंचायत को मात्र सरकारी योजनाएं क्रियान्वित करने की संस्था मात्र में बदलने की नीति त्यागना होगा। अपने क्षेत्र के जल जंगल जमीन सहित अन्य स्थानीय संसाधनों के प्रबंधन के संबंध में निर्णय लेने के लिए पंचायत स्वतंत्र होने होंगे। अतः पंचायतों की कार्यशैली और अधिकार क्या हों, इस पर पुनर्विचार की आवश्यकता है।

## विकास के नाम पर जल-जंगल-जमीन से बहुजनों का विस्थापन - बहुजन स्वराज पर यह कुठाराघात कैसे रोकें?

बहुजन के जीवन का आधार जल जंगल और जमीन है। यह आधार छिन जाए तो बहुजन स्वराज की संभावनाएं बहुत हद तक खत्म हो जाती हैं। ये प्राकृतिक संसाधन भौगोलिक रूप से वितरित हैं, और इसलिए इनका सरकारी केंद्रीकृत व्यवस्थापन विरोधाभासपूर्ण और विनाशकारी होगा। वास्तव मेंअंग्रेजों के आने के पहले हमारे देश में जल जंगल जमीन का सामूहिक प्रबंधन ग्रामीणों द्वारा किया जाता रहा। इनकी सम्मिलित मिल्कियत ग्रामीण जनता के पास थी। लेकिन अंग्रेजों ने सारे जल, जंगल जमीन सरकार की संपत्ति घोषित की। साथ में सामूहिक मिल्कियत की परिपाटी को ही खत्म कर व्यक्तिगत मिल्कियत की व्यवस्था लागू की। इसके बुरे नतीजे आज हमारे सामने हैं। जंगलों में अनादिकाल से रहनेवाले आदिवासियों को जंगलों से खदेड़ा जा रहा है। अपनी सहमति और ग्राम सभा की सहमति के बगैर किसान अपनी उपजाऊ जमीन और अपने स्वराजोन्मुख व्यवसाय-कृषि-से विस्थापित किए जा रहे है। पुनर्वास और पुनर्व्यवस्थापन की व्यवस्था किए बगैर किसान बेघर और बेसहारा खानाबदोश जीवन जीने के लिए मजबूर किए जा रहे हैं। किसानों और आदिवासियों के

स्वराज की संभावनाओं पर कुठाराघात किया जा रहा है, उन्हें "विकास" रूपी राक्षस के शिकार बनाए जा रहे हैं। जल, जंगल, जमीन पर बहुजन का सामूहिक प्रबंधन की नीति लागू किए बगैर बहुजन स्वराज असंभव है। इस विषय पर भी बहुजन स्वराज पंचायत में महत्वपूर्ण चर्चा होगी।

### ज्ञान, स्वराज, शिक्षा और रोजगार,और जेन-ज़ी आंदोलन के प्रति बहुजन दृष्टिकोण क्या है?

स्वराज का आधार ही ज्ञान है। अज्ञानी का स्वराज प्राप्त करना नामुमकिन है; प्राप्त कर भी लें तो भी वह अल्प समय के लिए ही कायम रहेगा। कारण, ज्ञानवान अन्य लोग उसपर शीघ्र आधिपत्य जमाएंगे। इस प्रकार समाज में प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञानी होना स्वराज की स्थापना की पहली शर्त है। और हम मानते हैं कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति ज्ञानी है। अगर उसके ज्ञान में कुछ कमी है तो भी वह अपनी इस कमी को दूर करने की क्षमता रखता है। विशिष्ट लोग, विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर या विश्वविद्यालयों तथा उन्नत शिक्षा संस्थाओं में पढ़कर डिग्री प्राप्त करने वालों के पास ही ज्ञान है, ऐसा हम नहीं मानते हैं। किसान, कारीगर, आदिवासी, महिला - बहुजन - भले ही पढ़े-लिखे न हों, और न डिग्रीधारी हों,, अपनी लोकविद्या के बलबूते पर स्वतंत्र रूप में जीवन यापन करते हैं। वे भी ज्ञानी हैं। विश्वविद्यालय या उन्नत शिक्षा संस्थानों में ही ज्ञान केंद्रित है, और अन्यत्र कहीं नहीं है, ऐसा सोचना न केवल गलत है, पर बहुजनों की लोकविद्या का अनादर और अपमान है। विशिष्ट जनों द्वारा बहुजनों की लोकविद्या को ज्ञान नहीं मानना, इस असमानता से शुरू होती है बहुजनों के शोषण की और गुलामी की कहानी। अतः लोकविद्या को मान्यता और प्रतिष्ठा देना और दिलाना बहुजन स्वराज का महत्वपूर्ण कार्य है।

विद्या, विद्यालय, शिक्षण संस्थाओं की स्वायत्तता, शिक्षा नीति, परीक्षा प्रणाली, सरकारी नौकरियों की चयन प्रक्रिया, रोजगार-परक शिक्षा, कौशल विकास आदि तमाम विषयों पर बहुत सारी चर्चाएं जेन-ज़ी के आंदोलन के संदर्भ में देश में चल रही है, जिनका संबंध लोकविद्या और बहुजन स्वराज से है। जेन-ज़ी आंदोलन में बहुजन समाज से निकले बेरोजगार युवा बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। ऐसे में बहुजन स्वराज के पक्षधर सामाजिक कार्यकर्ता का जेन-ज़ी आंदोलन के प्रति तटस्थ रहना उचित नहीं है। तटस्थ रहकर हम बहुजन युवा वर्ग से संवाद करने का एक अच्छा अवसर खो देंगे। बहुजन स्वराज पंचायत में शिक्षा, रोजगार तथा जेन-ज़ी आंदोलन पर बहुजन दृष्टिकोण क्या है, इस विषय पर

एक सत्र आयोजित किया जाना चाहिए। इस को लेकर आपके विचार आमंत्रित है।

### अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से संबंधित हमारी समझ बहुत संक्षेप में नीचे दिया है:

ग्लोबलाइजेशन का दौर जिसमें अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देशों ने कृषि सहित अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पूंजी निवेश पर अपना आधिपत्य जमाया वह खत्म हो चुका है। वह एकध्रुवीय दुनिया थी जिसका नियंत्रण अमेरिका के हाथ में था। पिछले बीस-पच्चीस सालों में चीन की ताकत बहुत तेजी से बढ़ी है। साथ में सोवियत यूनियन के टूट जाने के बाद रूस अपनी सामरिक बल, परमाणु हथियार, कच्चा तेल और गैस, तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के बल पर अपनी शक्ति वापस लेने में काफी सफल हो गई है। ऐसे में दुनिया आज बहुध्रुवीय हो गई है। जहां वर्चस्व खत्म होने के कारण पश्चिमी दुनिया में ग्लोबलाइजेशन और बहुपक्षीय समझौतों और संस्थाओं के विरुद्ध वातावरण तैयार हो गया है, वहीं चीन ग्लोबलाइजेशन और बहुपक्षीय संस्थाओं के चैंपियन के रूप में उभर रहा है। साथ में विश्व भर में निरंकुश पूंजीवादी ताकतों और राजसत्ता के बीच बढ़ती सांठगांठ के कारण हर जगह तानाशाहों का उदय हो रहा है। वे दुनिया की आबादी और उनकी गतिविधियों को अपनी एजेंडा के अनुरूप नियंत्रित करना चाहते है। इसकेलियें AI - कृत्रिम बुद्धि - का सहारा लिया जा रहा है। राष्ट्र, संप्रभुता, लोकतंत्र आदि अवधारणाएं अप्रासंगिक हो रहीं हैं। क्या दुनिया के सामने स्वराज एक सशक्त विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है?

उपरोक्त वर्णित विचारणीय मुद्दों पर आपकी प्रतिक्रिया हम जानना चाहतयदि आप अपनी प्रतिक्रिया लिखकर भेजेंगे तो हम आपके आभारी रहेंगे। इससे पंचायत के विषयवार सत्र क्या होंगे यह तय करने में हमे मदद मिलेगी।

सत्र क्या होंगे और कब होंगीं इसकी विस्तृत सूचना अगले पत्र में दी जाएगी। आप से पुनः निवेदन है कि आप पंचायत में अपनी उपस्थिति की पुष्टि शीघ्र भेजें और साथ में अपनी लिखित प्रतिक्रिया/सुझाव भी भेजें।

सधन्यवाद।


**विद्या आश्रम वाराणसी तथा गांधी भवन छतरपुर की ओर से**

**कृष्ण गांधी, झांसी** **दमयंती पानी, छतरपुर**
**9415057535** **9399080336**

## 21वीं सदी में बहुजन स्वराज का शिक्षा-आख्यान

1. शिक्षा व्यवस्था में किसी भी तरह के सुधार के बारे में सोचने के पहले 'ज्ञान' पर चिंतन की ज़रूरत है. बहुजन के ज्ञान (समाज में निहित ज्ञान) यानि लोकविद्या को शिक्षा में 'ज्ञान' का दर्जा हो.
2. लोकविद्या की प्रकृति विविधता की स्वायत्तता को मान्यता देती है. क्षेत्र, भाषा, समाज, लिंग, आदि की विभिन्नताओं की सत्ताओं की मान्यता के साथ सहजीवन, खुशहाली और सम्मान के नित नवीन रास्तों को गढ़ने की क्षमता रखती है.
3. वर्तमान शिक्षा में आधुनिक साइंस को ही एकमात्र 'ज्ञान' का दर्जा मिला है. और साइंस पूँजी और राज्यसत्ता के साथ अपने जन्म से जुड़ा है, उनसे अलग नहीं हो सकता. ऐसे में आधुनिक शिक्षा पूँजीवाद और पूंजीवादी व्यवस्था(आज का लोकतंत्र) को ही मज़बूत करने वाली साबित हुई है.
4. शिक्षा व्यवस्था में बहुजन-ज्ञान की भागीदारी सामाजिक-आर्थिक और सत्ता के लोक-संचालित व्यवस्थाओं के रूप सामने लाती है और आधुनिक (साइंस-पूँजी-राज्यसत्ता के गठबंधन वाली) एकाधिकार व्यवस्था को तोड़ने के रास्ते बनाती है. बहुजन के ज्ञान को मान्यता का अर्थ साम्राज्यवादी और ब्राह्मणवादी दोनों ही सत्ताओं से मुक्ति के दरवाज़े खोलना है.
5. निश्चित ही ऐसी शिक्षा व्यवस्था को गढ़ने के लिए बहुजन को अपने ज्ञान (लोकविद्या), विरासत, भूमिका आदि के नए आख्यान को गढ़ने की ज़रूरत है. बहुजन स्वराज पंचायतों की एक भूमिका इस आख्यान को आकार देने की है.

## शिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रयोग

भारत के आज़ादी के आन्दोलन के समय शिक्षा के क्षेत्र में भी विविध विचार और प्रयोग हुए. शिक्षा के सार, पढ़ाने की भाषा और तरीके, व्यवस्थाओं और आवश्यक संसाधन आदि मुद्दों पर विविध चिंतन किया गया. उस दौरान चिंतन और प्रयोगों की नींव आज़ाद भारत के आज़ाद मनुष्य को गढ़ने का लक्ष्य रखती थी और इसलिए पश्चिम के साम्राज्यवादी चिंतन से मुक्त होकर इस देश के बहुजन की दृष्टि से शिक्षा की व्यवस्थाओं को गढ़ने की वकालत करती थीं. अंग्रेज़ीदां शिक्षा के मूल्य, पद्धति और व्यवस्थाओं का बहिष्कार करने का युवाओं से जोरदार आवाहन भी हुआ. साथ ही 'नई तालीम' के नाम से नए मूल्यों के साथ शिक्षा के प्रयोग भी हुए. इन प्रयोगों का एक मज़बूत आधार बहुजन की दृष्टि में रहा. गांधीजी ने कहीं यह ज़िक्र किया है कि **बालक के घर में जिस रोज़गार से आय होती है उसको एक आधार बनाकर अर्थ व्यवस्था , समाज व्यवस्था , सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के बारे में शिक्षा दी सकती है. यह एक अद्भुत दर्शन था, इसे बहुजन की दृष्टि को समाहित करके ही सिखाया जा सकता था.** इस तरह से शिक्षित बालक बहुजन के सम्मान और खुशहाली के लिए कोई भी नीति बनाने की कसौटी बनाने में महारत हासिल करते.

इसी दौरान रबीन्द्रनाथ और अरबिंदों ने भी अलग ढंग से भारत की मिट्टी के अनुकूल शिक्षा के विचार और प्रयोग किये. देश के अलग-अलग हिस्सों में और भी कई प्रयोग हुए होंगे लेकिन आज़ाद भारत के नीति निर्धारकों ने इन सभी को नज़रंदाज़ कर दिया.

आज़ादी के बाद भी शिक्षा क्षेत्र में प्रयोगों का सिलसिला जारी रहा. सरकारों द्वारा और स्वयं सेवी संस्थाओं ने भी शिक्षा के प्रसार के लिए कई तरह के काम किये लेकिन धीरे-धीरे इन सभी जगहों पर शिक्षा में 'ज्ञान' के सवाल पर बहस कम होती चली गई. प्रगति की अवधारणा के तहत तो इस सवाल को ही गायब कर दिया गया. 'ज्ञान' तो केवल 'साइंस' ही होता है इस मान्यता को पूरी तरह स्वीकार कर लिया गया. साइंस के अलावा अन्य सभी ज्ञान के प्रकारों जैसे लोकविद्या को निकृष्ट करार दिया गया. वैकल्पिक शिक्षा के नाम से आये सुझाव या प्रस्ताव भी कम अधिक यही दृष्टि रखते रहे.

समाज में पल रहे ज्ञान के विविध प्रकारों में ऊंच-नीच न कर विविध ज्ञानधाराओं के बीच बराबरी और भाईचारा बनाने वाले विचार और व्यवस्थाओं पर चिंतन होना चाहिए. ज्ञान के क्षेत्र में विविधता को मान्यता देना एक स्वस्थ शिक्षा व्यवस्था की जान है.

- **शिक्षा वही जो गैर-बराबरी ख़त्म करे**
- **विद्या वही जो लोकहित साधे**
- **श्रम वही जो इज्ज़त से रोटी दे**

## इस अंक में


- सम्पादकीय
- कविता — गिरीश सहस्रबुद्धे
- शिक्षा का ज्ञान से रिश्ता — प्रेमलता सिंह
- विद्या आश्रम पर ज्ञान पंचायत : शिक्षा, ज्ञान और रोज़गार (रपट) — रामजनम
- ज्ञान-समंदर में रहते हुए शिक्षा-क्षेत्र अछूता — चित्रा सहस्रबुद्धे
- 18वीं और 19वीं सदी में भारत में शिक्षा — गांधीजी द्वारा सत्य का उद्घाटन
- विद्या आश्रम, सारनाथ परआयोजित ज्ञान पंचायत में सम्बोधन हेतु पत्र — राजेश आज़ाद
- शिक्षक (कविता) — रामावतार सिंह
- शिक्षा में पुनर्विचार — आर्यमान और इरीना
- बहुजन स्वराज पंचायत, छतरपुर (मध्यप्रदेश) का निमंत्रण — कृष्ण गाँधी और दमयंती पाणी


•

**वाराणसी ज्ञान पंचायत**

**वाराणसी ज्ञान पंचायात यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान-मंच है. इस ज्ञान-मंच की मान्यता यह है कि हर मनुष्य, स्त्री और पुरुष, ज्ञानी है. यह ज्ञान-पंचायात ज्ञान पर जन-सुनवाई का रूप भी है.**

**इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य गृहणी, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजीनीयर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह के ज्ञान में ऊँच-नीच नहीं की जाती और सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा दिया जाता है.**

**बहुजन स्वराज का आधार**

**किसान, कारीगर, आवदिासी, लोक-<br>कलाकार, महिलाएं, ठेला-पटरी-गुमटी के<br>दुकानदार, और सेवा-मरम्मत करने वाले<br>सभी परिवार, ये सब हैं<br>लोकविद्या के ज्ञानी और जानकार.**

**जब माना जायेगा लोकविद्या को भी ज्ञान,<br>मिलेगा पढ़े-लिखे लोगों के ज्ञान-सा सम्मान<br>जब होगी इनकी आमदनी भी<br>सरकारी कर्मचारी-सी,<br>तभी मिलेगी इस मुल्क को सच्ची आज़ादी.**

**बहुजन-समाज के हर परिवार की आय<br>सरकारी कर्मचारी जैसी पक्की, नियमित और बराबर हो.<br>इसी में देश की खुशहाली का रास्ता है.**

•


**वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच और कारीगर नजरिया द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित. [संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), कमलेश कुमार 7843916011]**
**पता : विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-22100**